

Paper - 3 (Macro Economics)

* रोजगार के प्रतिष्ठित सिद्धांत की मुख्य बातें

(i) अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार होगा

(ii) अर्थव्यवस्था में स्वतः समायोजन की शक्ति होती है। अतः जो कुछ भी उत्पादित किया जाता है उसका उपभोग कर लिया जाता है।

(iii) देश में अतिउत्पादित असंभव है, क्योंकि प्रत्येक उत्पादन समाज में अतिरिक्त क्रय शक्ति को जन्म देती है। अतः कुल आय कुल व्यय के बराबर होता है।

(iv) अर्थव्यवस्था में सामान्य बेरोजगारी भी असंभव है। यदि कोई मजदूर बेरोजगार होता है तो इसके लिए मजदूर स्वयं जिम्मेदार है, क्योंकि यह स्थिति तभी संभव है जब मजदूर अपनी उत्पादकता से अधिक मजदूरी माँगता है।

(v) अर्थव्यवस्था में लघाज दर बहुत लचिला होता है, जिसके कारण वचत के बराबर विनियोग हो जाता है।

(vi) अर्थव्यवस्था में मुद्रा केवल वस्तुओं के आदान-प्रदान का साधन है।